मीडिया की सर्वोत्तम प्रथाएँ

अधिकतर लोगों से पूछें कि उनके पास मानव तस्करी से संबंधित सूचना कहां से आती है और प्राय: उत्तर होता है "मैंने इसके बारे में समाचार में सुना।" मीडिया इस अपराध के बारे में धारणाएं बनाने और सार्वजनिक चर्चा को दिशा देने में बड़ी भूमिका निभाता है। मानव तस्करी के संबंध में मीडिया रिपोर्टें कैसे महत्वपूर्ण हैं कि *क्या* रिपोर्ट किया जा रहा है और इन कहानियों का समग्र प्रभाव जनता, राजनीतिज्ञों, कानून लागू करने वालों और यहां तक की अन्य मीडिया आउटलेटों द्वारा मुद्दे को समझने के तरीके में दिखाई पड़ता है।

हाल ही के वर्षों में मानव तस्करी के संबंध में कई रिपोर्टों में गलत सूचना तथा पुराने आँकड़े, आरोपित अथवा शोषित उत्तरजीवियों और सम्मिश्रित शब्दों को शामिल किया गया है। इस समस्या पर सुस्पष्ट रोशनी डालने की बजाय ऐसी रिपोर्टें एक ऐसे अपराध में भ्रम पैदा करती हैं जो पहले से ही कम रिपोर्ट किया जाता है और प्राय: जनता द्वारा ठीक से समझा नहीं जाता। चूँकि मानव तस्करी का मुद्दा लगातार जनता का ध्यान आकर्षित कर रहा है, इसलिए मीडिया के सदस्यों की ज़िम्मेदारी है कि वे पूरी तरह से तथा ज़िम्मेदारी के साथ रिपोर्टिंग करें और शोषित किए गए लोगों का संरक्षण करें।

कुछ अच्छी पद्धतियां पत्रकारों को सही रास्ते पर रख सकती हैं:

- **भाषा संबंधी मामले।** उत्तरजीवी और पीड़ित में अंतर है। वेश्यावृत्ति और सेक्स तस्करी। मानव तस्कर व्यापार और मानव तस्करी। मानव तस्करी एक ऐसा जटिल अपराध है जिसे कई समुदाय अभी भी समझने का प्रयास कर रहे हैं। शब्दों को सही प्रकार से प्रयोग न करने से श्रोता भ्रमित हो सकते हैं तथा उन्हें गलत जानकारी मिल सकती है और यह तस्करी के पीड़ितों की पहचान करने तथा उन्हें सुरक्षित करने में प्राधिकारियों की विफलता का एक कारण बन सकता है। एक उदाहरण है - बाल सेक्स तस्करी के स्थान पर "बाल वेश्यावृत्ति" शब्द का नुक़सानदेह प्रयोग। अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत 18 वर्ष से कम आयु का बच्चा किसी व्यावसायिक सेक्स क्रियाकलाप में शामिल होने के लिए सहमति नहीं दे सकता जो ऐसे किसी भी बच्चे को सेक्स तस्करी का पीड़ित बनाता है। *व्यक्तियों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों की तस्करी को रोकने, इसका दमन करने तथा सजा देने के लिए प्रोटोकोल में परिभाषित किए गए अनुसार मानव तस्करी और आम तौर पर प्रयोग किए जाने वाले अन्य संबंधित शब्दों की जानकारी प्राप्त करें।*

- **पुन:पीड़ित किए जाने के खतरे।** मानव तस्करी के उत्तरजीवियों की फोटो तथा नाम उनकी सहमति के बिना प्रकाशित नहीं किए जाने चाहिए और पत्रकारों को 18 वर्ष से कम आयु के बच्चे के साथ उसके माता/पिता अथवा संरक्षक की अनुपस्थिति में बात नहीं करनी चाहिए। मानव तस्करी के मामलों में प्राय: जटिल सुरक्षा संबंधी ऐसी चिंताएं होती हैं जो प्रकाशित लेख से बढ़ सकती हैं। यदि कोई उत्तरजीवी अपनी कहानी साझा करने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं है अथवा कहानी प्रकाशित होने के परिणाम नहीं समझता, तो यह वर्षों बाद भी उस आघात अथवा शर्मिंदगी को वापस पैदा कर सकता है। *यह सुनिश्चित करें कि मानव तस्करी का उत्तरजीवी अपनी कहानी साझा करने के लिए सहमत हो उससे पहले वह यह समझे कि एक बार कहानी प्रकाशित होने के बाद यह जनता को उपलब्ध होगी और हमेशा के लिए उपलब्ध रहेगी।*

- **उत्तरजीवियों की कहानियाँ।** हालाँकि उत्तरजीवियों का साक्षात्कार करना मानव तस्करी को समझने में महत्वपूर्ण हो सकता है – और एक अच्छी कहानी का आधार भी हो सकता है – परंतु उत्तरजीवियों से सम्पर्क करने और उनके अनुभवों के बारे में जानने के और अनुकूल तरीके हैं। रिपोर्टरों को सर्वश्रेष्ठ संभव दृष्टिकोणों को जानने तथा समझने के लिए उत्तरजीवियों द्वारा चलाए जाने वाले संगठनों सहित उन NGOs के साथ समय बिताना चाहिए जो उत्तरजीवियों के साथ काम करते हैं। *लचीलापन रखिए, मांग न करें और उत्तरजीवियों से एक ही बैठक में उसकी कहानी बताने की अपेक्षा न करें। उत्तरजीवियों के साथ समय बिताएं, उन्हें जानें, और यदि उचित हो तो कहानी पूरी होने के बाद भी उनसे मिलें।*

- **आधी-अधूरी कहानी।** जब मीडिया केवल एक प्रकार की मानव तस्करी की रिपोर्टिंग करता है तो जनता को कहानी का केवल एक भाग पता चलता है। मानव तस्करी में सेक्स तस्करी, बाल सेक्स तस्करी, बंधुआ मजदूरी, बंधुआ बाल मजदूरी, घरेलू गुलामी, ऋण के लिए बंधुआ मजदूरी और बाल सैनिकों की गैरकानूनी भर्ती अथवा उपयोग शामिल हैं। *मानव तस्करी और इस अपराध के पूरे क्षेत्र के बारे में जनता की समझ को बेहतर बनाएं।*

- **आँकड़ों का खेल।** रिपोर्टर प्राय: आँकड़ों के साथ बात करते हैं परंतु मानव तस्करी से संबंधित विश्वसनीय आँकड़े मिलना मुश्किल है। मानव तस्करी एक गुप्त रूप से किए जाने वाला अपराध है और बदले के डर, शर्म अथवा उत्तरजीवी के साथ जो हो रहा है उसे समझ न पाने के कारण कुछ ही उत्तरजीवी आगे आते हैं। आँकड़े हमेशा सही चित्र नहीं दिखाते। *अविश्वसनीय आँकड़ों पर ध्यान देने की बजाय उत्तरजीवियों की व्यक्तिगत*

कहानियाँ, नए सरकारी प्रयासों अथवा नवाचारी अनुसंधान प्रयासों को जानने की कोशिश करें।

- **मानव तस्करी होती है।** केवल यह रिपोर्ट करना कि मानव तस्करी होती है, कोई कहानी नहीं है। मानव तस्करी संयुक्त राज्य सहित विश्व के हर देश में होती है। *गहराई में जाएं और यह खोजें कि किन लोगों का उत्पीड़न किए जाने की सर्वाधिक संभावना है, उत्तरजीवियों को किस प्रकार की सहायता दी जाती है और आपका समुदाय इस समस्या को जड़ से समाप्त करने के लिए क्या कर रहा है।*

- **ज़िम्मेदारी से रिपोर्टिंग करें।** एक सामाजिक प्रभाव छोड़ने की आशा करने वाले पत्रकारों के लिए मानव तस्करी एक लोकप्रिय विषय है। पत्रकार उत्तरजीवियों से मित्रता कर सकते हैं, उनका विश्वास जीत सकते हैं और कुछ मामलों में उन्हें एक नुक़सानदेह स्थिति से बाहर निकालने में सहायता कर सकते हैं। यह विशिष्ट रूप से उचित नहीं है। पत्रकारों को पत्रकारिता और सामाजिक सक्रियता के बीच की रेखा को मिटाना नहीं चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपने आपको मानव तस्करी के बारे में जानकारी देकर और उनके समुदायों में शामिल होकर इस अपराध को समाप्त करने के लिए अपनी ओर से प्रयास करना चाहिए, परंतु पीड़ित को सहायता मान्यताप्राप्त सेवा प्रदाताओं द्वारा दी जानी चाहिए। *अनुचित रूप से दखल देने की बजाय एक उत्तरजीवी को एक प्रतिष्ठित सेवा प्रदाता से जोड़िए ताकि यह सुनिश्चित कर सकें कि वे सुरक्षित हैं और उनकी आवश्यकताएं पूरी हो रही हैं।*

संबंधित विषय: मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका और प्रभाव के बारे में *[मानव तस्करी के संबंध में मीडिया रिपोर्टिंग संबंधी लिंक डालें]* पर अधिक जानकारी प्राप्त करें।